Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-79-86

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 79-86
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com
Author's :

सतीश दवे

शोध कर्ता, उज्जैन, मध्यप्रदेश.

Corresponding Author :

सतीश दवे

शोध कर्ता, उज्जैन, मध्यप्रदेश.

जैव रसायन और रस निष्पत्ति सिद्धान्त

प्रस्तावना : ज्ञात ज्ञान से अज्ञात ज्ञान की ओर अग्रसर होना मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्ति है इसके लिए वह हमेशा प्रयास करता रहता है प्रयास के क्रम में वह नवीन ज्ञान की सत्यता की जांच परख करता है। रस-सिद्धांत भारतीय काव्यशास्त्र का- सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत माना जाता है। अनेक आचार्यो ने तत्सम्बन्धी अवधारणाओं को प्रस्तुत किया है। हिंदी में रस-सिद्धांत के प्रति विद्वानों का आकर्षण रहा है।

रस सिद्धांत और रस निष्पत्ति को लेकर अनेक विद्वानों ने व्याख्या की है। रस को कार्य-कारण, लौकिक -अलौकिक, आध्यात्मिक -दार्शनिक मनोवैज्ञानिक पक्षों को लेकर व्याख्याएं की गयी हैं और सभी ने अपने अपने गंभीर निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है। नाट्य या काव्य को कला का रूप मानने के कारण उसका वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण नहीं किया गया है। इस शोध पत्र में रस सिद्धांत का वैज्ञानिक विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। विशेष रूप से जैव रसायन शास्त्र के आलोक मे अपने विचार प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह चिकित्सकीय या रसायन शास्त्रीय अध्ययन नहीं है। वरन भारत मुनि के रस संबंधी विचारों की पुष्टि करने का प्रयास किया जा रहा है।

यहाँ हम रस के विभिन्न अवयवों यथा रस का आश्रय, आलंबन, रस के भेद, रसाभास, रसदोष आदि की चर्चा नहीं करेंगे। इस शोधपत्र का प्रतिपाद्य है- जैव रसायन के अनुसार रस स्वरुप निरुपण।

आलेख : काव्य की रचना के साथ जब प्रेक्षकों, श्रोताओं, पाठकों, को काव्य का आनंद आने लगा तो मनीषियों के मन में एक स्वाभाविक प्रश्न उठा कि इस काव्य का आनंद क्यों होता है या व्यक्ति उससे आनंदित क्यों होता है तब काव्य के उस मूल तत्व की तलाश शुरु हुई और जिसे काव्य की आत्मा कहा गया और इस के लिए अनेक विद्वानों ने अपने-अपने सिद्धांत प्रस्तुत किये।

जहाँ भरतमुनि रस की बात करते हैं वहीं भामह अलंकार को सर्वोपरि मानते हैं।[1] वामन ने रीति को प्रमुखता दी।[2] तो आचार्य शंकुक ने

वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा के रूप में दर्शाया है।[3] वहीं आनंदवर्धन ने ध्वनि की व्यापकता का घोष किया।[4] आचार्य क्षेमेंद्र इन सबसे अधिक औचित्य को प्रमुख मानते हैं।[5] अनेक मनीषियों द्वारा काव्य की आत्मा के विविध रूपों की व्याख्या और समीक्षा भी की गयी है। इन सारे सिद्धांतों के बावजूद रस सिद्धान्त व्यापक रूप से मान्य रहा।

रस को काव्य की आत्मा माने जाने पर प्रश्न उठा कि रस का स्वरूप क्या हो सकता है? आत्मा को विद्वान आध्यात्मिक रूप मानते हैं। इसी कारण रस को आध्यात्मिक या भाव रूप ही मान लिया गया। परंतु भरत मुनि ने रस को भौतिक पदार्थ और लौकिक रूप माना है।[6] इससे यह भी अनुमान होता है कि भरत मुनि जैव रसायन शास्त्र के ज्ञाता थे। यहाँ तक कि भरत मुनि उदाहरण से बहुत ही स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। उन्होंने जब कहा कि रस एक पदार्थ है और आस्वाद्य है। यहीं से जैव रसायन शास्त्र की शुरुआत होती है। उसके पहले कि हम समझे कि ऐसा क्यों कहा जा रहा हैं यह आवश्यक है कि हम रस और रस निष्पत्ति के संबंध में अन्य विद्वानों के मत को समझलें।

सर्वप्रथम समझना होगा कि रस अर्थात क्या ? ऋग्वेद सोमरस को रस मानता है।[7] अथवा रस की युक्तता को प्रकट करने लिए प्रयुक्त हुआ है।[8] अथर्ववेद में इसे गाय का दूध सा कहा गया है।[9] अग्निपुराण और साहित्यदर्पणकार के अनुसार रस में सार चमत्कार है।[10] तैत्तरीयोपनिषद रस को ब्रह्मानंद स्वरूप मानता है।[11]

रस इति कः पदार्थः ? भरतमुनि इसका उत्तर देते हैं कि काव्यार्थ ही रस है। "आस्वाद्यमानत्वात्"[12] यह आस्वाद्य पदार्थ है। स हि लौकिकः। यह लौकिक रस है।

संस्कृत मे रस की व्युत्पत्ति दो प्रकार से दी गयी है-

(1) सरति इति रसः। अर्थात जो सरणशील, द्रवणशील हो, प्रवहमान हो, वह रस है।

(2) रस्यते आस्वाद्यते इति रसः। अर्थात जिसका आस्वादन किया जाय, वह रस है।[13]

रसानां केन रसात्वमित्येकः, (नाट्यशास्त्र 6/2) रसों को "रस" क्यों कहा जाता है। आत्रेय आदि मुनिगणों ने भरत मुनि से यह प्रश्न किया था। भरत मुनि ने इसका उत्तर दिया 'तेन रस एव नाट्यम्।' अर्थात रस ही नाट्य है कहकर वे उदाहरण देकर रस का विस्तार कर देतेहैं।[14] जिस तरह से स्वादिष्ट भोजन से रसना और मन को तृप्ति मिलती है, ठीक उसी तरह मधुर काव्य का रसास्वादन करने से हृदय को आनंद मिलता है। इसी साहित्यिक आनंद का नाम 'रस' है।

यहाँ से स्पष्ट है भरत रस सम्बधी किसी अलौकिक या आध्यात्मिक पक्ष को नहीं ले रहे हैं वरन् स्पष्ट रूप से रस को भौतिक पदार्थ स्वीकारते हैं जो यह भी दर्शाता है कि भरतमुनि शरीर की चयापचय क्रिया प्रतिक्रियाओं से परिचित है। आधुनिक विज्ञान इसे अंतःस्रावी शास्त्र या Endocrinology कहता है। जो शरीर के अंदर होने रसायनात्मक परिवर्तन को दर्शाता है। भरत मुनि संकेत देकर रुक नहीं जाते हैं वरन् वे अपने रस संबंधी विचार की पुष्टि करते हैं। वे नाट्यशास्त्र मे ली गई सामग्री के बारे मे बताते हुए रस को अथर्ववेद से लिया हुआ बताते हैं "जग्राह पाठ्यमृग्वेदात सामम्यो गीतमेंव च यजुर्वेदादभिनयान् रसानार्थर्वणादपि। "(नाट्यशास्त्र 1/17)" रसानाथर्वणादपि " यहाँ रसान् के बहुवचन प्रयोग द्वारा रस की अनेकताका भी सूचन हो रहा है।[15]

अभिनव गुप्तपादाचार्य ने भी रसनेन्द्रियों से ग्रहण होने वाले पदार्थ को रस कहा है-रसनेन्द्रियग्राह्यं हि रसशब्दः प्रसिद्धः।[16] शारदातनय नारद के मत को रखते हुए मन के विकार से रस की उत्पत्ति को दर्शाते हैं।[17] डॉ.. सच्चिदानन्द चौधरी के अनुसार संस्कृत के काव्यशास्त्रियों ने रसानुभूति को ऐन्द्रिय नहीं माना है बल्कि उनकी दृष्टि में यह एक प्रकार की आध्यात्मिक अनुभूति है।[18]

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आदि हिन्दी में रसवादी आलोचक हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने संस्कृत के रसवादी आचार्यों की तरह रस को अलौकिक न मानकर लौकिक माना है और उसकी लौकिक व्याख्या की है। "मेरी समझ में रस रसास्वादन का प्रकृत स्वरूप आनंद शब्द से व्यक्त नहीं होता है लोकोत्तर और अनिर्वचनीय आदि विशेषणों से ना तो उसका अवाचकत्व का परिहार होता है ना प्रयोग का प्रायश्चित।"[19]

डॉ.. नगेन्द्र के अनुसार "रस का मूल प्रयोग निश्चय ही वनस्पतियों के द्रव्य के लिए होता था जिनके अपने-अपने आशीर्वाद और गुण थे। द्रव्य के लिए गुण और गुण के लिए द्रव्य वाचक शब्द के लाक्षणिक प्रयोग के निर्माण अनुसार लक्षणों के द्वारा आस्वाद और ऊर्जा आदि के अर्थ में उसका विकास हो गया। सूक्ष्म से सूक्ष्म तर होता हुआ आत्मानंद या ब्रह्मानंद के लिए प्रयोग होने लगा अतः वाणी का रस काव्य रस का ही समानार्थक है यों तो वेद में कवि और काव्य शब्दों का भी प्रयोग है पर वह वर्तमान पारिभाषिक प्रयोग से थोड़ा दूर है काव्य की अपेक्षा वॉक वर्तमान अर्थ के अधिक निकट है अतः वाग्रस को काव्य रस का वाचन मानना सर्वथा युक्ति संगत है।"[20]

इससे ज्ञात होता है कि प्राचीन कालीन काव्यशास्त्र विद्वानों तथा आधुनिक काव्यशास्त्र विद्वानों में दो मत बहुत स्पष्ट है एक वो विद्वान हैं जो रस को भौतिक पदार्थ मानते हैं दूसरा वे हैं जो रस को आध्यात्मिक भाव मानते हैं। हाँलाकि भौतिक पदार्थ मानने में प्रमुख भरत मुनि ही हैं।

भरत मुनि कहते हैं कि उन्होंने अथर्ववेद से रस लिया है वैसे अथर्ववेद ऋग्वेद का अंश ही है लेकिन उन्होंने विशेष रूप से अथर्ववेद का संदर्भ लिया है जो यह स्पष्ट करता है कि उन्होंने रस को भाव रूप की अपेक्षा पदार्थ रूप में माना है। सांख्य दर्शन में जिस तरह से मन महत् और अहंकार को तत्त्व माना गया है और तैत्तरीयोपनिषद् मे जिस तरह से पाँच प्रकार के कोशों का वर्णन किया गया है (अन्नमयकोश, प्राणमयकोश, मनोमयकोश, ज्ञानमयकोश, आनंदमयकोश) संभवतः भरत मुनि इनमें से सूत्र ग्रहण किया हो और जिस तरह से अरस्तु विरेचन की बात करते हैं, वैसे ही भरत मुनि रस को पदार्थ रूप में मानकर एक विशेष विचार प्रस्तुत करते हैं। हालांकि भरत मुनि ने कहीं भी इस तरह से रसायन शास्त्र की बात नहीं की है लेकिन जिस तरह से उन्होंने रस का विश्लेषण किया है वह स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि भरत मुनि का ध्यान शरीर की अंतः स्रावी ग्रंथियों की ओर भी था। जब वह भोजन की स्वाद की बात करते हैं और रस को आस्वाद्य रूप मानते हैं तो निश्चित रूप से उनका मत है कि रस सिर्फ भाव नहीं वरन् वह एक द्रव्य है और जिसके रासायनिक गुणों के कारण ही हमें रस निष्पत्ति होती है

जब भरत मुनि से प्रश्न किया जाता है कि कथमास्वाद्यते रसः।[21] तब मुनि कहते हैं कि "सुमनसः पुरुषा" अर्थात सुमनस पुरुष -इसका आस्वाद्य करते हैं।[22]

परवर्ती विद्वानों ने इस सुमनस पुरुष को सहृदय पुरुष मान लिया है परंतु सहृदय कहना अनुचित है सुमनस वह पुरुष है जो मन से इसे स्वीकार कर लेता है आज हम जानते हैं कि हृदय मात्र एक पंपिंग स्टेशन है जो रक्त के प्रवाह को देह के प्रत्येक अंग प्रत्यंग तक पहुंचाता है। जिसमे किसी प्रकार की संवेदनाएं नहीं होती हैं और यह मन है जहां सारी संवेदनाएं विराजित होती है और इसीलिए भरत ने उसे सुमनस कहा है।

प्रो सुरजंन दास स्वामी एकाग्रमनसि च भोक्तयोस्वादयितृता की व्याख्या दूसरी तरह से करते हैं वे मानते हैं कि रसास्वादन मानसप्रतीति है न कि रसनेंद्रजन्य प्रतीति।[23]

तो क्या आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से हम रस निष्पत्ति का विश्लेषण कर सकते हैं।कुछ विद्वान इससे सहमत नहीं हैं डॉ.. हरद्वारीलाल शर्मा के अनुसार भी "विज्ञान का कारण कार्य संबंध भी रस की स्थिति का विवेचन नहीं कर सकता संक्षेप में रस का विश्लेषण विज्ञान के साधारण उपकरणों द्वारा असंभव है।"[24]

इसके विपरित डॉ. रामानंद तिवारी "बुद्धि के बिना जीवन की सफलता और भाव का संपन्न होना असंभव मानते हैं।"

"बुद्धि के बिना ना मनुष्य का व्यक्तिगत जीवन सफल हो सकता है और ना उसकी संस्कृति भाव ही संपन्न हो सकते हैं।"[25] तो क्या रस निष्पत्ति में बुद्धि का तनिक भी हस्तक्षेप नहीं होता है। संभवतः होता है, हम एक उदाहरण देना चाहते हैं। एक विशेष तरह का रोग होता है जिसमें व्यक्ति की चेतना शून्य हो जाती है, वह सब देखता है, सुनता है, सांस लेता है स्पर्श उसको होता है, वह खाना खाता है सब करता है। लेकिन उसमें किसी भी तरह की रस अभिव्यक्ति या अनुभूति दिखाई नहीं देती है। क्योंकि उसकी संचेतना उसके मस्तिष्क को वह सूचना नहीं दे रही है (जो एक

सामान्य व्यक्ति को देती हैं)। उसका मस्तिष्क अंतःस्रावी ग्रंथियों को हार्मोन्स उत्पादन करने का निर्देश नहीं दे रहा है। इस कारण रस निष्पत्ति नही हो रही है।

आइए हम दूसरा उदाहरण लेते हैं कोई व्यक्ति दर्द से कराह रहा हो तो उसे हास्य या श्रृंगार रस की अनुभूति नहीं होगी क्योंकि मस्तिष्क उस समय अंतःस्रावी ग्रंथियों को दूसरे हार्मोन्स का संदेश दे रहा है। हमने अक्सर यह सुना होगा कि अभी हमारा मूड नहीं है। यह मूड उस हार्मोन का ही प्रभाव है जो मनोदशा को विनियमित करता है। हम कह सकते हैं कि रस निष्पत्ति में कहीं ना कहीं उन पांचो कोशों का समावेश होता ही है जो तैत्तरियोपनिषद में बताई गई है। मन और मस्तिष्क का अध्ययन विशेष रूप से मनोविज्ञान की शाखा में किया जाता है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन में सामान्य रूप से व्यक्ति के व्यवहार का विश्लेषण किया जाता है और उसी से उस की चिकित्सा की जाती है। वे मानते हैं कि भूतकाल में हुई किसी विशेष घटना के कारण वर्तमान का विकार उत्पन्न हुआ है।

परंतु वर्तमान में जब से जैव रसायन शास्त्र का अध्ययन आरंभ हुआ है अब वैज्ञानिक या यूं कहे चिकित्सक इस बात को समझने लगे हैं कि विशेष रसायनों के प्रभाव के कारण व्यक्ति की गंभीर अवस्थाओं मनोदशाओं और व्यवहार के लिए उत्तरदायी है। उदाहरण के रूप में देखें तो साधारण रूप से किसी मिर्गी के रोगी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन यह बता सकता है कि पूर्व की दुर्घटना के कारण उसके मस्तिष्क पर ऐसा प्रभाव हुआ है कि विशिष्ट घटना के समान कोई परिस्थिति होने पर व्यक्ति को मिर्गी का दौरा पड़ता है। जब उसे वह घटना पुनःस्मरण कराई जाती है तब अक्सर रोगी व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है। परंतु अधिकांश प्रकरणों में इसका प्रभाव नहीं दिखा था। आधुनिक शोधों से ज्ञात हुआ है कि विशेष रसायन के कारण व्यक्ति की मनोदशा इस तरह की हो जाती है। भारतीय वैज्ञानिकों ने भी इसका अध्ययन किया था जिसे चित्तवृत्ति का नाम दिया गया था। हाँलाकि चित्तवृत्ति के चिकित्सकीय प्रयोग के संबंध में अधिक शोध नहीं किये गये। तेत्तरियोपनिषद और सांख्य दर्शन मन की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हैं परंतु परवर्ती शोधकर्ताओं ने उसे अलौकिक अनुभूति मानकर छोड़ दिया। यदि यह देखा जाए कि मस्तिष्क किस तरह से कार्य करता है और मन उसे किस तरह निर्देशित करता है तो हम रस निष्पत्ति का जैव रसायन शास्त्र की दृष्टि से विश्लेषण कर सकते हैं।

भरत मुनि ने भोजन के रस के बारे में उदाहरण दिया है इसी तारतम्य में हम दूसरा उदाहरण लेते हैं। हम यह नहीं जानते कि हमें भूख क्यों लगती है या थकान होने पर नींद क्यों आने लगती है। हमें स्वप्न में दृश्य क्यों दिखते हैं जबकि हमारी चक्षु नामक ज्ञानेंद्री बंद है। या स्वप्न में हम किसी से बात किस तरह से कर लेते हैं। यह ऐसे प्रश्न है जिन्हें अधिकतर विद्वानो ने अव्यक्त, अनिर्वचनीय मानकर या सुक्ष्म शरीर का उदाहरण देकर छोड़ दिया है। आधुनिक शोध यह बताते हैं कि विशेष रसायन जो हमारे शरीर की मनोदशा को नियंत्रित और विनियमित करते हैं।[26] उन्हें हारमोंस कहा जाता है। ये हारमोंस व्यक्ति की लगभग हर क्रिया को प्रभावित करते हैं या विनियमित करते हैं। जैसे ऊपर उदाहरण दिया गया है कि हमें भूख क्यों लगती है बाहर से कोई ऐसा रस दिखाई नहीं देता कि हम कह सके कि यह इस कारण से भूख लगी है परंतु अंदर की ग्रंथियाँ रासायनिक संदेशवाहक अर्थात हारमोंस अमाशय में भेजती हैं तब अमाशय मस्तिष्क को यह सूचना भेजता है कि अब अमाशय भोजन ग्रहण करने को तैयार है तब मस्तिष्क आप तक संदेश पहुंचा देता है भूख लगी है आपको भोजन करना है। हॉर्मोन हमारे मनोदशा को आकार देने मे भी सहयोग देते हैं ये रासायनिक संदेशवाहक जैसा व्यवहार करते हैं जो हमारी भावनाओं, ऊर्जा स्तर, और सम्पूर्ण मनोदशा को प्रभावित करते हैं। Hormones tend to coordinate various metabolic processes in the body[26] Hormones coordinate almost all biological activities, primarily metabolism, growth, development and reproduction of animals[27]

हारमोंस और endocrinolgy आज के चिकित्सा विज्ञान का एक बहुत जटिल और विस्तृत विषय है जिसमें

कई तरह की जानकारियां सम्मिलित है। क्योंकि हमारा विषय चिकित्सकीय ज्ञान को यहां प्रदर्शित करना नहीं है इसलिए हम सिर्फ हारमोंस की संक्षिप्त जानकारी और उससे संबंधित होने वाले प्रभाव को यहां प्रस्तुत करना चाहते हैं। हम यहाँ कुछ हार्मोन्स के नाम देना चाहते हैं जिनका सीधा संबंध हमारी मनोदशा से है

1. सेरोटोनिन - स्वाभाविक प्रसन्नता का हार्मोन। यह खुशी शांति और आराम को विनियमित करता है।
2. डोपामाइन - उत्साह हार्मोन। यह प्रसन्नता, उत्साह और प्रेरणा से जुड़ा हार्मोन है।
3. एंडोर्फिन - नैसर्गिक पीड़ा नाशक। खुशी और आराम की भावना को बढ़ावा देता है।
4. कॉर्टिसोल - तनाव का हार्मोन। जब इसका स्तर बढ़ता है तो हमें चिंता होती है या गुस्सा बढ़ सकता है।
5. ऑक्सीटोसिन - यह जुड़ाव और भरोसे की भावना से जुड़ा हुआ हार्मोन होता है।

चिकित्सा विज्ञान के अनुसार इन हॉर्मोन के असंतुलन से मनोदशा मे विपरीत प्रभाव या अवसाद हो सकता है[28]। यदि संख्या पर ध्यान दें तो भारत मुनि ने प्राथमिक स्थायी भावों की संख्या 4 बताई है। यहाँ हम 5 हार्मोन पाते हैं। ये स्रावी ग्रंथियां दो प्रकार की होती हैं एक वे जिन ग्रंथियों में नलिकाएं होती है जो रसायन को सीधे उस अंग तक पहुंचाती है जहां उसकी आवश्यकता होती है इन्हे बहि स्रावी ग्रंथियाँ कहा जाता है। इसका सबसे सहज और सीधा दिखने वाला उदाहरण भोजन के समय आने वाली लार और दूसरा उदाहरण गर्मी या मेहनत के कारण निकलने वाला पसीना है। लेकिन कुछ ग्रंथियां ऐसी होती है जिनमें नलिकाएं नहीं होती है और जो संदेश वाहक रसायन को सीधे रक्त में प्रवाहित कर देते है ये रासायनिक संदेश व्यक्ति की मनोदशा को प्रभावित करते हैं इन्हें अंतः स्रावी ग्रंथियां कहते हैं।

एक प्रश्न उठता है कि हारमोंस का सीधा संबंध रस निष्पत्ति से किस तरह हो सकता है। वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हुआ है कि बाह्य वातावरण के प्रभाव से कुछ ऐसे हारमोंस निकलते हैं जो व्यक्ति की मनोदशा को बदलते हैं। हाँलाकि वर्तमान के अनुसंधान में यह स्पष्ट नहीं है कि जिन रसों की कल्पना भरत मुनि ने करी है उन 8 रसों या बाद में सम्मिलित होने वाले तमाम रसों को किसी विशिष्ट रसायन से जोड़ा जा सकता है। लेकिन निश्चित रुप से यह कहा जा सकता है कि भविष्य में होने वाले अनुसंधान इस बात को स्पष्ट कर सकेंगे कि प्रत्येक रस का अलग अलग रसायन हैं या कुछ रसायनों के भिन्न अनुपातिक संयोग से भिन्न रसों की निष्पत्ति होती है।

भरत मुनि के अनुसार स्थाई भाव व्यक्ति के अंदर सदैव रहता ही है। यह स्पष्ट करता है कि हमारे शरीर के अंदर रहने वाला रसायन स्थाई भाव है। विद्वानगण भी यह मानते हैं कि जितने मनोविकार हैं उसमें स्थामी भावों के नाम से अभिहित मनोविकार हो प्रधान है।[29]

रस तरंगिणीकार-श्रीमद्भानुदत्त के अनुसार "रसनिष्पत्ति पर्यन्त ये मनोविकार स्थिर रूप से विद्यमान रहते हैं। (पराऽनभिभायो मनोविकारो वा सकलप्रधानो विकारो वा स्थायिभावः------। चरमसमय पर्यन्त स्थायित्वादस्य स्थायित्व - व्यपदेशः।[30] विभाव और अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से रस निष्पत्ति होती है।[31]

जैव रसायन शास्त्र के अनुसार हार्मोन्स के रासायनिक संदेशों के कारण एक विशेष मनोदशा को प्रकट करते हैं। यहां हम विभाव अनुभव को एक साथ भी रख सकते हैं क्योंकि विभाव का अनुकरण अनुभाव ही करता हैं जो एक तरह से रस निष्पत्ति की रासायनिक प्रक्रिया को आरंभ करता है।

भरत मुनि तेत्तरियोपनिषद के उन पांच महाकोशों को परोक्ष रुप से संदर्भित करते हैं जहां पर रस पदार्थ के रूप में अन्नमय कोश से प्रवाहित होता है यदि व्यक्ति चैतन्य है तो प्राणमय कोश से संदेश मनोमयकोश में जाते हैं यह संदेश विभाव के कारण प्रवाहित होता है मनोमय कोश में अनुभाव रस को प्रभावित कर संचारीभाव अर्थात रासायनिक संदेश (हार्मोन्स) देते हैं जो इसे आनंदमय कोश में अभिव्यक्त कर देते है। इन सारे विभाव, अनुभाव और व्याभिचारी भावों के संयोग से रस निष्पत्ति होती है। ये सभी क्रियाएं अंतःस्रावी ग्रंथियों के रासायनिक संदेशों के कारण होती है

जिन्हे देखा नहीं जा सकता था मात्र अभिव्यक्त या अनुभूत किया जा सकता है। इस कारण इसे आध्यात्मिक भाव कहा गया। संचारीभाव के बारे मे एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि ये व्यक्ति की भौतिक दशा बताते हैं। चपलता, हर्ष, विषाद, आवेग आदि यही परिणाम हार्मोन्स भी देते हैं। ऊपर दिए गए हार्मोन्स के विवरण में यह दर्शाया गया है कि सेरोटोनिन, डोपामाइन, कॉर्टिसोल, एंडोर्फिन आदि का प्रभाव भी यही पाया गया है। हार्मोन्स के उत्पादन की प्रक्रिया भारतीय स्फोट सिद्धांत से मिलती है, और संचारी भाव के अस्थायी होने की बात भी हार्मोन्स के अस्थायी होने से जुड़ती है। यही नहीं अभिनव गुप्तपादाचार्य भी रसनेन्द्रियों से ग्रहण होने वाले पदार्थ को रस कहते हैं वही प्रक्रिया यहाँ भी होती है विशेष कोश उन रासायनिक संदेशों को ग्रहण करते हैं जिन्हे संग्राहक या receptor कहा जाता है।

निष्कर्ष : इसी से सिद्ध होता है कि भरत मुनि ने रस को पदार्थ क्यों कहा है और वे जब विभाव अनुभाव और संचारीभाव के संयोग की बात करते हैं तो वे निश्चित रुप से उन रासायनिक प्रक्रियाओं की ओर इंगित करते हैं। जिनके कारण हारमोन्स संदेशवाहक बन कर रस निष्पत्ति या कला के आनंद को व्यक्त करते हैं।

संदर्भ सूची :

1. "न कांतमपि निर्भूषं विभाति वनिता मुखम्" – " काव्यालंकार"- शंकर राम चंद्र शास्त्री द श्री बालमनोरमा 1956 - 1/13 पृष्ठ-10.
2. रीतिरात्मा काव्यस्य। वामन। काव्यालंकार सूत्रवृत्ति 1/2/6आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि डॉ. नगेंद्र हिंदी अनुसंधान परिषद दिवि 1954 पृष्ठ-18).
3. वक्रोक्तिः काव्य जीवितम् - हिंदी काव्यशास्त्र में रस सिद्धान्त डॉ. सच्चिदानन्द चौधरी अनुसंधान प्रकाशन 1965 पृष्ठ-43.
4. काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैः यः समाम्नातपूर्वः। ध्वन्यालोक 1/1).
5. औचित्यस्य चमत्कारिणश्चारुचर्वणे। रस जीवितभूतस्य विचारं कुरुतेऽधुना। औचित्यविचारचर्चा कारिका3। क्षेमेंद्र की औचित्य दृष्टि रामपाल विद्यालंकार मोतीलाल बनारसीदास 1960 पृष्ठ-7.
6. नाट्यशास्त्र अनुवाद बाबुलाल शुक्ल पृष्ठ-284..
7. दधानः कलशे रसम् ऋग्वेद 9/63 /13 जन्मे रसे वावृधे 9/86/29.
8. स्वादू रसो मधुमेयो वराय 9 -4/86-11.
9. रसो गोपुः प्रविष्टो यः 14-2-58.
10. आनन्दः सहजस्तस्य व्यज्यते स कदाचन। व्यक्तिः सा तस्य चैतन्य- चमत्काररसाव्हया। । आग्निपुराण 340/1/2 व साहित्यदर्पण 3/87.
11. रसो वै स रसःह्येवाय लब्ध्वा आनंदोभवति (तैत्तरीयोपनिषद् वल्ली 2 अनुवाक 7).
12. हिंदी काव्यशास्त्र में रस सिद्धांत डॉ.. सच्चिदानंद चौधरी अनुसंधान प्रकाशन 1965 पृष्ठ-113.
13. यथा हिं नाना व्यंजनसंस्कृतमन्नं भुंजाना रसानास्वादयन्ति सुमनसः पुरुषाः हर्षादींश्चाधिगच्छन्ति तथा नानाभावाभिनयैर्व्यंजितान् वागंगसत्वोपेतान् स्थायिभावान् आस्वादयन्तिसुमनः प्रेक्षकाः हर्षादींगच्छन्ति - नाट्यशास्त्र अनुवाद बाबुलाल शुक्ल पृष्ठ-284.
14. हिंदी काव्यशास्त्र में रस सिद्धांत डॉ. सच्चिदानंद चौधरी अनुसंधान प्रकाशन 1965 पृष्ठ-113.
15. अभिनव भारती - सञ्जीवनभाष्य प्रधान संपादक डॉ. नगेंद्र हिंदी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय 1964 1,2, व6 अध्याय पृष्ठ-404 (पूर्व संस्करण).
16. भावप्रकाशनम शारदातनय मदन मोहन अग्रवाल चौखम्बा सुर भारती प्रकाशन 1983द्वितीय अधिकार कारिका 68 -70.

17. संस्कृत काव्य शास्त्र के रस सिद्धान्त डॉ. सच्चिदानन्द चौधरी अनुसंधान प्रकाशन कानपुर 1965 पृष्ठ-128.
18. रस मीमांसा आचार्य रामचंद्र शुक्ल काशी नागरीप्रचारिणी सभा 1969 पृष्ठ-101.
19. रस सिद्धांत डॉ. नगेन्द्र नैशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली 1964 पृष्ठ-9.
20. अभिनव भारती - सञ्जीवनभाष्य प्रधान संपादक डॉ. नगेंद्र हिंदी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय 1964 पृष्ठ-497.
21. एकाग्रमनसि च भोक्तयोस्वादयितृता। अन्य चित्तस्य भूंजानस्याप्यास्वादाभिमानाभावात्.
22. रससिद्धांत की शास्त्रीय समीक्षा प्रो सुरजंन दास स्वामी नीरज शर्मा प्रकाशन 1983 पृष्ठ-2.
23. रस और रसास्वादन डॉ. हरद्वारीलाल शर्मा - हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग शक संवत् 1885 पृष्ठ-5.
24. अभिनव रस मीमांसा - डॉ. रामानंद तिवारी राजस्थान साहित्य अकादमी उद्दयपुर 1983 पृष्ठ-47.
25. Hormones play an important role in control and coordination in humans along with nervous system -teachers ADDA 247 page-1.
26. INTRODUCTION TO HORMONES UNIVERSITY OF PNG SCHOOL OF MEDICINE AND HEALTH SCIENCES DISCIPLINE OF BIOCHEMISTRY & MOLECULAR BIOLOGY PBL MBBS II SEMINAR page-2.
27. IGNOUS READING MATTERIAL ON HARMONES BLOCK 1 PAGE-20.
28. HABITS OF A Happy Brain of a Retrain Your Brain to Boost YourSerotonin, Dopamine, Oxytocin,& Endorphin Levels - Loret ta Graziano Breuning, PhD Avon, Massachusetts Habitschapter 1,page number-13.
29. रस तरंगिणी - श्रीमद्भानुदत्त - अनुवाद गोपालदत्त जोशी मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशरौस नई दिल्ली1974 पृष्ठ-6 व 7.
30. उपरिवत.
31. 'विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पत्ति' – नाट्यशास्त्र अध्याय-6.

संदर्भ ग्रथों की सूची :

संस्कृत ग्रंथ :

1. ऋग्वेद.
2. तैत्तरीयोपनिषद्.
3. अग्निपुराण.
4. नाट्यशास्त्र अनुवाद शुक्ल बाबुलाल शास्त्री चौखम्बा प्रकाशन दिल्ली 1983.
5. अभिनव भारती सञ्जीवनभाष्य संपादक डॉ. नगेंद्र प्रकाशक हिंदी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय 1964.
6. ध्वन्यालोक - शर्मा पण्डित बदरी प्रसाद प्रकाशक जय कृष्ण दास हरी दास गुप्ता 1937.
7. साहित्यदर्पण – व्याख्याकार शर्मा शेषराज प्रकाशक कृष्णदास अकादेमी 1993.
8. भावप्रकाशनम शारदातनय मदन मोहन अग्रवाल प्रकाशक चौखम्बा सुर भारती प्रकाशन 1983.
9. काव्यालंकार"- शंकर राम चंद्र शास्त्री प्रकाशक द श्री बालमनोरमा 1956.
10. काव्यालंकार सूत्रवृत्ति 1/2/6आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि, डॉ. नगेंद्र प्रकाशक हिंदी अनुसंधान परिषद दिवि 1954.
11. रस तरंगिणी - श्रीमद्भानुदत्त - अनुवाद गोपालदत्त जोशी प्रकाशक मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशंस नई दिल्ली 1974 पृष्ठ-6 व 7.

हिंदी ग्रंथ :

1. नाट्यशास्त्र की भारतीय परंपरा और दशरुपक – द्विवेदी हज़ारीप्रसाद प्रकाशक राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1963.
2. रस मीमांसा - शुक्ल आचार्य रामचंद्र प्रकाशक काशी नागरीप्रचारिणी सभा 1969.
3. रस सिद्धांत – डॉ. नगेन्द्र प्रकाशक नैशनल पब्लिशिंग न्यू दिल्ली 1964.
4. संस्कृत काव्य शास्त्र के रस सिद्धान्त - चौधरी डॉ. सच्चिदानन्द प्रकाशक अनुसंधान प्रकाशन कानपुर 1965.
5. रस सिद्धांत की दार्शनिक और नैतिक व्याख्या – बाली तारकनाथ प्रकाशक विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 1964.
6. क्षेमेंद्र की औचित्य दृष्टि - विद्यालंकार रामपाल , प्रकाशक मोतीलाल बनारसीदास 1960.
7. रस सिद्धांत और सौन्दर्य शास्त्र – जैन निर्मला प्रकाशक नैशनल पब्लिशिंग न्यू दिल्ली 1967.
8. अभिनव रस मीमांसा - तिवारी डॉ. रामानंद , प्रकाशक राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर 1983.

अंग्रेजी ग्रंथ :

1. HABITS OF A Happy Brain of a Retrain Your Brain to Boost Your Serotonin, Dopamine, Oxytocin, & Endorphin Levels - Loret ta Graziano Breuning,, publisher Adams media Avon. 2016.
2. Buddha's Brain by Rick Hanson, Publisher New Harbinger Publication inc 2009.
3. INTRODUCTION TO HORMONES UNIVERSITY OF PNG SCHOOL OF MEDICINE AND HEALTH SCIENCES DISCIPLINE OF BIOCHEMISTRY & MOLECULAR BIOLOGY PBL MBBS II SEMINAR.
4. IGNOU'S READING MATTERIAL ON HARMONES BLOCK-1.

वेब नोट्स :

1. Hormones play an important role in control and coordination in humans along with nervous system -teachers ADDA 247.

•